an>

Title: Need to give funds to farmers as drought relief measure.

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): सभापति महोदय, सर्वप्रथम मैं प्रधान मंत्री माननीय मोदी जी को बधाई देना चाहता हूं कि हमारे बुंदेलखण्ड के दर्द को उन्होंने समझने का प्रयास किया। हमारे यहां जो सूखा पड़ा था, उस सूखा राहत का जो पैसा यहां से भेजा गया था, आज तक उत्तर प्रदेश सरकार ने पूरे बुंदेलखण्ड के किसानों को वह पैसा नहीं दिया है। मैंने पहले भी सदन में इस बात को बड़े दर्द के साथ उठाया था। जब मैंने उस बात को उठाया तो पी.एम.ओ. में माननीय गृह मंत्री जी की अध्यक्षता में एक मीटिंग हुई और उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव को बुलाकर, उ.प्र. के अधिकारियों से पूछा गया कि बुंदेलखण्ड के किसानों का सूखा राहत का कितना पैसा बाकी है। सिर्फ एक हफ्ते के अन्दर 1,304 करोड़ रुपए सीधे किसानों के "जन-धन" खाते में जमा करने का निर्देश भारत सरकार ने यहां से दिया।

महोदय, मैं बड़े दुःख के साथ आपसे कहना चाहता हूं कि हमारे बुंदेलखण्ड के किसानों का दर्द उत्तर प्रदेश की सरकार नहीं समझ रही है। आज एक महीना बीतने वाला है। पर, आज तक किसी एक किसान के खाते में एक भी पैसा नहीं पहुंचा है। हर प्रकार से हम लोग उसके लिए बात कर चुके हैं। वहां की प्रदेश सरकार से बात कर रहे हैं। लेकिन, वहां किसानों को इतनी असहनीय पीड़ा है, जिसकी कोई सीमा नहीं है।

महोदय, वैसे तो मैं प्रायः कविता इत्यादि नहीं बोलता हूं। लेकिन, आज मैं बस तीन लाइनें बोलने की आपसे अनुमति चाहता हूं। हमारे अन्नदाता किसान की यह स्थिति है कि वहां गांव-गांव में लोग बोलते हैं -

जमीन ज़ल चुकी है,

आसमां बाकी है,

दरख्तों, तुम्हारा इम्तिहान बाकी है,

वो जो खेतों की मेड़ों पर बैठे हैं,

उन्हीं की आंखों में अब तक ईमान बाकी है,

बादलों, अब तो बरस जाओ सूखी ज़मीनों पर,

किसी के बच्चे की पढ़ाई बाकी है,

किसी की बेटी का विवाह बाकी है,

किसी का खेत गिरवी है,

किसी का लगान बाकी है।

सभापति महोदय, मैं निवेदन करके अपनी बात समाप्त करता हूं कि कम से कम उत्तर प्रदेश सरकार इस भाÂषा में इस बात को समझे।

HON. CHAIRPERSON:

Shri Bhairon Prasad Mishra is permitted to associate with the issue raised by Kunwar Pushpendra Singh Chandel.